International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at : http://euroasiapub.org/current.php?title=IJRESS
Vol. 6 Issue 9, September - 2016, pp. 146~150
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.225 , | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

''समकालीन कहानी स्वरूप एवं संवेदना स्त्री पुरूष संबंध''

डॉ. प्रतिमा सिंह

अतिथि विद्वान– (हिन्दी)

शासकीय कन्या महाविद्यालय, कटनी म.प्र.

सारांश

समकालीन कहानी विगत पाँच वर्षों दशकों से चर्चा के केन्द्र में है। जिसका आरम्भ स्वातंत्र्योत्तर दौर में उपजे मोहभंग, अनास्था, संघर्ष एवं बेरोजगारी के कारणों की देन माना गया है। समकालीन कहानी के पूर्व दौर नई कहानी में भी ऐतिहासिक बोध, तात्कालिक बोध और समसामयिक राजनैतिक, सांस्कृतिक बोध सक्रिय रहे है। जिसका विकास सातवें दशक के घटनाक्रम से सम्भव हो पाया है। संयुक्त परिवारों से एकल परिवारों का होना, महानगरी जीवन में आपाधापी, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति के कारण से स्त्री पुरूष सम्बन्धों में बदलाव समकालीन कहानियों में व्यापक रूप से चित्रण किया गया है। समकालीन हिन्दी कहानी में स्त्री पुरूष सम्बन्धों के पक्ष और विपक्ष में काफी कुछ कहानीकारों द्वारा लिखा गया है।, जिसे इस शोध पत्र द्वारा उल्लेखित किया जाना आवश्यक है।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कहानी में परिवर्तन देखने को मिलता है। इन कहानियों में जीवन और यथार्थ की परिपुष्टि की गई है। राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश द्वारा रचित कहानियों में यही समानता है। वस्तुतः नई कहानी आज के जीवन को जीने, उसे विभिन्न स्तरों पर समझने, उनके अर्थ तलाश करने तथा सार्थकता एवं निरर्थकता खोजने की कहानी है। इस दशक के कहानियों के विषय और भाषा शिल्प दोनों ही अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं विषय वस्तु की दृष्टि से इस दशक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें युग चेतना और युग जीवन के बारीक से बारीक स्पन्दनों को निजी अनुभव के सहारे व्यक्त किया गया है। समकालीन कहानीकारों ने अपनी ताजगी में भाषा और शिल्प को नई दिशा प्रदान किये। इसी के साथ नये सन्दर्भ, नये चित्र एवं नये प्रतीकों का प्रयोग भी किया।

सन् 1960 में हिन्दी कहानी ने एक नया मोड़ लिया। कुछ नये कथाकार कहानी मात्र को नकारते हुए अकहानी लिखने लगे अकहानी समस्त प्राचीन रूढ़ियों से मुक्त थी। आज की कहानियों में आस पास के घेरों को छोड़ती हुई आगे बढ़ रही है। इसी प्रकार स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी कहानी कई धाराओं में बहकर नये प्रयोग, आयाम तथा नई दिशा की आरे बढ़ने लगे। अकहानी, संचेतना कहानी एवं समान्तर कहानी ही समकालीन कहानियों के मिनीयुग है।

विश्वम्भर नाथ उपाध्याय के विचारानुसार, ''समकालीन शब्द यह बताता है कि काल के इस प्रचलित खण्ड या प्रवाह में मनुष्य की स्थिति क्या है। इसे उलटकर कहे तो कह सकते है कि मनुष्य की वास्तविक स्थिति को देख कर उसे अंकित या चित्रित करके ही हम समकालीन की अवधारणा को समझ सकते हैं। [1]

लेकिन हमारे आधुनिक भारतीय साहित्य में समकालीनता पद का प्रचलन नई कविता और नई कहानी के बाद रचना संदर्भों को लेकर हुआ है। अतः नरेन्द्र मोहन ने कहा है कि समकालीन को अर्थ किसी कालखण्ड या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रण भर नहीं है, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना उनके मूल स्त्रोत तक पहुंचाना और निर्णय ले सकने का विवके अर्जित करना है। समकालीन तात्कालिकता नहीं है। [2]

आजादी के बाद सत्ता का हस्तांतरण हुआ, सत्ता विदेशी शोषकों के हाथ से निकल कर देशी पूँजीपतियों, पद लोलुप नेताओं के हाथों में आ गई और अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिए आजादी के समय किये गये त्यागों को याद दिलाया और जनता को मूर्ख बनाया। ऐसी स्थिति ने प्रेम चन्द्र ने जिस व्यापक सहानुभूति के साथ गाँवों से लेकर शहरों तक फैली दीनहीन जनता के जीवन की विसंगतियों और संघर्षों का चित्रण किया।

''पूर्ववर्ती कथाकारों में जैनेन्द्र और अज्ञेय, अश्क आदि की मनोवैज्ञानिक दार्शनिकता का पुरजोर से विरोध करने वाले नई क्रांतिकारिता का उद्घोष करने वाले नये कहानीकारों ने पाश्चात्य परिवेश और पीड़ा को पात्रों के माध्यम से मुखरित करना आरम्भ किया, इनकी कहानियों में भाषायी शब्द जाल सामाजिकता के स्थान पर आत्मनिबद्ध वैयक्तिकता और समवेत राष्ट्रीय दिशा के स्थान पर भयानक निरूद्देश्यता की अभिव्यक्ति हो रही थी। कहानी को गाँव और 'शहर' की सीमाओं में बाँटकर उसकी व्यापक सामाजिकता को तोड़ने का प्रयास किया। कला कला के लिए साहित्य को विचार धारा से रहित करने का आग्रह ने सलिलता और सौष्ठव से भाषा को नया संस्कार दिया। लेकिन वैचारिक स्तर पर उसे दिवालिया बना दिया।''[3]

भारतीय जनजीवन में स्वतंत्रता के पश्चात् एक नये अनिश्चित और व्यापक उद्वेतनमय समाज का जन्म हुआ जो हर दिन अपना रूप स्वरूप बदल रहा है। प्राचीन और बूढ़ी निष्क्रिय सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए शिथिल और प्रवचनामय संस्कार और परिवर्तित मूल्य का युग एक ऐसी पृष्ठभूमि है। जिसके व्यक्तिमय एक विघटन, विश्रृंखलता और दुख महसूस करता है। हर सम्बन्ध टूटता से संकटग्रस्त है, या वह नये परिवेश के अनुकूल नवीनीकरण की प्रक्रिया पीड़ा झेल रहा है। व्यक्ति के अस्तित्व बोध को स्वरूप और उसकी संवेदना की प्रकृति भी बदल गई है।

समकालीन कहानियाँ जहाँ मानव जीवन की आपाधापी संघर्ष चेतना और परिवर्तित मूल्यबोध एवं स्त्री पुरूष के नये मान मूल्यों से जुड़ी है। वह निसन्देह पुरानी कहानियों से अलग है। वैसे भी आधुनिक कहानी पुरानी कहानी की तुलना में छोटी और संक्षिप्त होती हैं पुरानी कहानी में अलौकिक और अति प्रकृत तत्वों

की प्रधानता पाई जाती है, आधुनिक कहानी लौकिक और जीवन के यथार्थ का चित्रण होता है। पुरानी कहानी चमत्कार और अविश्वसनीयता पर भरोसा करती थी, आधुनिक कहानी ने स्वाभाविकता और विश्वसनीयता का मार्ग अपनाया। पुरानी कहानी में कौतूहल, जिज्ञासा और उत्सुकता बनाए रखने के लिए अप्रासंगिक करतब भी हुआ करते थे, आधुनिक कहानी ने सहजता, प्रमाणिकता और जीवन्तता को महत्व प्रदान किया गया।

मोहन राकेश के शब्दों में ''आज कुछ लोग नई कहानी या समकालीन कहानी का सम्बन्ध का एक विशेष तरह के शिल्प या वस्तु के साथ जोड़कर उसका मूल्यांकन करना चाहते है। हमारी रचना का क्षेत्र निःसीम है, और रचना की वास्तविक सिद्धि उसके प्रभाव की व्यापकता में है। इसके लिए इतना ही आवश्यक है कि लेखक का दृष्टिकोण स्पष्ट हो और उसकी रचना उसके और पाठक के बीच एक घनिष्ठता है कि स्थापना कर सके। 'इसके लिए अभिव्यक्ति में जिस स्वाभाविकता का आवश्यकता है, वह जीवन की सहज अनुभूतियों से जन्म लेती है, और वह स्वतः ही रचना को सहज संवेध बना देती है। ये अनुभूतियाँ हमें जीवन के हर पक्ष और हर पहलू से प्राप्त हो सकती है।''[4]

आज समाज में पारिवारिक विघटन होते जा रहे हैं। शोषण से निम्न, मध्यम वर्ग दुखी है, सुनने वाले के कान शायद नहीं है। समकालीन कहानियों में इसका चित्रण किया गया है। पं. विजेन्द्र नाथ मिश्र 'निर्गुण' की 'सफर' पारिवारिक सम्बन्धों के बदलाव को समर्पित करती है। आजकल की शिक्षित पुत्रवधुएँ वृद्ध सास–ससुर का अनावश्यक भार उठाने की जहमत नहीं लेना चाहती अपना स्वतंत्र उन्मुक्त और इच्छित जीवन–जीना चाहती है। यदि पति नहीं मानता और अपने माता पिता को कुछ समय के लिए भी साथ–रखना चाहता है, तो पत्नी बच्चों को लेकर मायके जाने की धमकी देती हैं, और पुत्र चुप हो जाता है, वह अपनी गृहस्थी, को सुख–शांति समाप्त नहीं करना चाहता। स्त्री–पुरूष पति पत्नी सम्बन्धों का पारम्परिक रूप 'एक छत के नीचे' आज विपरीत है। सी भास्कर राव ने ऐसे परिवार की कथा, रोचक ढंग से कही है, जो एक छत के नीचे रहते हैं, परन्तु उसके पति पत्नी जैसा लगाव न होकर अलगाव है। वे छत के नीचे केवल रहते हैं, परंतु अपने विगत में खोये रहते हैं। बल्कि पत्नी एक नारी रूप में किसी पुरूष से प्रेम करती थी, और उससे विवाह न हो सका। उसी प्रकार पति पुरूष रूप में एक स्त्री से प्रेम करता था और विवाह उससे नहीं हो सका। समाज व्यवस्था के अनुसार पति–पत्नी के रूप में उन्हें एक छत मिली है, जिससे उन्हें नीचे रहना पड़ता है। ''रेल के दो पटरियों की तरह वर्षों से वे अपने–अपने सुख–दुख को लेकर समान्तर साथ–साथ जीते रहे हैं। फिर भी एक दूसरे से अनजुड़े, असंबद्ध, साथ होते हुए भी अलग।'' हंस 1979

''जीवन स्थितियों के तीव्र बदलाव के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों में परिवर्तन आया है, मूल्यों के प्रति बदली हुई दृष्टि पूरी तरह समकालीन कहानी में चित्रित हुई है।'' [5] समकालीन कहानियों में भी जीवन में पीड़ियों के अन्तर बात को स्वर मिलता है। हमारी सोच और चिन्तन प्रक्रिया में जीवन में प्रेम विवाह, विवाह, परिवार में माँ–बाप, भाई बहन, पिता पुत्री आदि सुदृढ़ सम्बन्धों के प्रति बहुत परिवर्तन हुआ है। ''समकालीन

हिन्दी कहानी की पृष्ठभूमि में नई कहानी आन्दोलन के पूर्व की प्रगतिशील कहानियाँ व सामाजिक सुधार की कहानियों की भी विवादास्पद भूमिका रही है, वैसे प्रेमचन्द के बाद जो महत्वपूर्ण कहानीकार हिन्दी जगत में अपनी नई प्रवृत्ति के साथ प्रकाशमान हुए, यथा जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, इलाचंद्र जोशी ओर उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि में सबके सब विदेशीकथा साहित्य उसकी कला परपंरा से पूर्ण परिचित तथा अंगला और उर्दू की कहानी कला के शान के साथ पूर्ण सजग और गंभीरता के साथ हिन्दी कहानी क्षेत्र में अवतरित हुए थे।''[6]

जैनेन्द्र ने जहाँ अपनी कहानियों में शरीर आधारित प्रेम का चित्रण किया है। वहीं उन्होंने सात्विक व आत्मिक प्रेम का भी चित्रण किया है। 'जान्हवी' कहानी में 'जान्हवी' किसी अज्ञात प्रियतम के प्रेम में मग्न हैं वह रोज कौओं को रोटी के टुकडे चुनती है, और गाती है, ...''दो नैना मत खाईयों, मत खाईयो.... पीउ मिलन की आस।'' अपने प्रियतम के प्रति उसका प्रेम ऐसा दृढ़ है कि वह माता पिता द्वारा कहीं विवाह की बात चलाए जाने पर भावी वर को पत्र द्वारा अपनी अनिच्छा जता देती हैं अज्ञेय ने स्त्री पुरूष सम्बन्धों का चित्रण भी व्यक्तिबोध के आधार पर ही किया है। प्रेम को लेकर उसकी दृष्टि रोमान्टिक है, 'सांप' कहानी में अज्ञेय ने सात्विक प्रेम का चित्रण किया है, वहाँ शरीर का निषेध है। नायक स्वप्न देखता है व स्वप्न को यथार्थ का रूप देने के लिए अपनी प्रेयसी को ''जंगल में, जहाँ सन्नाटा है, एकान्त है, जहाँ सब अपनी अपनी धुन में ऐसा मस्त है, कि मस्ती की एक नई धुन बन गई है, वहाँ जहाँ कोई न होगा, वहाँ चलने को कहता है। प्रेयसी सहज ही उसके साथ चल पड़ती है ''वहाँ वैसी ही मुग्ध, अपने में सम्पूर्ण मेरे साथ चली आ रही थीं। मैं उसे देख लेता हूँ, उसके साथ होने के बात सहसा मन में उभरती थी, फिर बीहड़ वन के अकेले, हरे गीले, धुधलपन की, फिर मेर आँखे उसकी आँखों की कोर से एक दुलकी हुई लट के साथ फिसलकर उसके ओठों तक आती थी और मेरा मन ठिठक जाता है, आगे वर्णन है कि प्रेयसी को लेकर उसके मन में वासना जागती है, परन्तु उसकी सहजता, सरलता, निष्कपटता, असहायता को देखकर वह स्वप्न की उलझन से मुक्त हो जाता है। स्वप्न में मैंने देखा था वह और मैं. ..... हम ..... लेकिन स्वप्न की उलझन जैसी सुलझ गई, मेरी दोहरी दीठ इकहरी हो गई और मैंने देखा, मैं अलग यहाँ, वह अलग वहाँ, बड़ी सुन्दर, बड़ी अच्छी, मेरे साथ जंगल में अकेली, लेकिन अलग वहाँ।''[7]

हिन्दी में सन् 1970 के बाद जब कहानीकारों ने नक्सलवाद, इमरजेंसी, गरीबी, भूख, साम्प्रदायिकता, भूमंडलीकरण आदि जैसे सामने घट रही समकालीन स्थितियों को कहानी का विषय बनाना प्रारम्भ किया, तब आलोचकों ने कहा कि यह तो समसामयिक समाज एवं जीवन स्थितियों का कलात्मक चित्रण है, कहानी अलोचक मधुरेश ने भी कहानी में ''समकालीन होने का अर्थ सिर्फ समय के बीच होने से नहीं है, समकालीन होने का अर्थ है समय के वैचारिक और रचनात्मक दबाब को झेलते हुए उनसे उत्पन्न तनावों और टकराहटों के बीच अपनी सर्जनशील द्वारा होने को प्रभावित करना।

यदि हम समकालीन कहानीकारों में स्वयंप्रकाश (पार्टीशन), पंकज विष्ठ (बच्चे गवाह नहीं हो सकते),

उदय प्रकाश, (तिरिछ और अंत में प्रार्थना), संजीव (पाँव तले की दूब, दुनिया की सबसे हसीन औरत), सृंजय, (कामरेड का कोट), शिवमूर्ति (तिरिया चरितर), प्रेमकुमार मणि (खोज), देवेन्द्र (क्षमा करो हे वत्स) आदि की कहानियाँ देखें तो पता चलता है, कि इन कहानीकारों ने समकालीन समय के दबाब को महसूस करते हुए अपनी कहानियों में जिन्दगी के यथार्थ का गंभीर चित्रण किया है। समकालीन कहानी का जो इतिहास और स्वरूप है, उसका गहरा सम्बन्ध समकालीन समय के यथार्थ से है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विश्वम्भरनाथ उपाध्यायः समकालीन कहानी की भूमिका पृ.2
2. नरेन्द्र मोहन–समकालीन कहानी की पहचान पृ. 7
3. विश्वम्भरनाथ उपाध्यायः समकालीन सिद्धान्त और साहित्य पृ. 77
4. मोहन राकेश : आधुनिक हिन्दी कहानी पृ. 92
5. पुष्पपाल सिंह समकालीन कहानी सोच और समझ पृ. 12
6. लक्ष्मी नारायण लाल–आधुनिक हिन्दी कहानी पृ. 18
7. अज्ञेय ''साँप कहानी द्वारा लौटती पगडण्डियाँ पृ. 389